पाठ्यक्रम में निर्धारित छन्दों के लक्षण तथा उदाहरण,

1. **दोहा** :- दोहा एक मात्रिक छन्द है। इसे अर्द्ध-सम मात्रिक छन्द भी कहते हैं। दोहे में चार चरण होते हैं। इसके विषम चरणों अर्थात पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्रायें और सम चरणों में अर्थात दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्रायें होती हैं। सम चरणों के अंत में एक गुरु और एक लघु मात्रा का होना आवश्यक होता है।

उदाहरण:- रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून
पानी गये न ऊबरे, मोती मानुस चून

2. **चौपाई** :- चौपाई मात्रिक सम छन्द का एक भेद है। चौपाई में चार चरण होते हैं, प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं, तथा अन्त में दो गुरु होते हैं, या दो लघु होते हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में चौपाई छन्द का बहुत अच्छा निर्वाह किया है। अन्त में गुरु वर्ण होने से छन्द में रोचकता आती है।

उदाहरण :- जय हनुमान ग्यान गुन सागर - 16 मात्रा
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर - 16 मात्रा

3. **सोरठा** :- यह मात्रिक अर्द्धसम छन्द है। इसके विषम चरणों में 11 मात्रायें एवं सम चरणों में 13 मात्रायें होती हैं। तुक प्रथम एवं तृतीय चरण में होती है। इस प्रकार यह दोहे का उल्टा छन्द है। क्योंकि यहां पहले व तीसरे में -11-11 मात्रायें तथा दूसरे व चौथे में 13-13

उदाहरण !- कुंद इंदु सम देह, उमा रमन करुनायतन।
जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दन मयन।

आपने देखा कि इसके अंत में गुरु-लघु दोनों आते हैं।

Scanned with CamScanner

या जैसे हमने दोहे का उदाहरण लिया था, उसको उल्टा करके अगर हम लिखेंगे तो वह सोरठा बन जायेगा। प्रथम - तृतीय - 11, द्वितीय - चतुर्थ - 13

उदाहरण देखिए:-

बिन पानी सब सून, रहिमन पानी रखि
मोती मानस चून, पानी गये न उबरे